Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

32

मृणाल पाण्डे के कहानी साहित्य में ग्राम्य जीवन

डॉ. संजय ढोडरे
प्रोफेसर एवं शोध निदेशक
हिंदी विभाग, अभय महिला महाविद्यालय, धुले

प्रा. महेश रणदिवे
शोधार्थी, पीएच्. डी. (हिंदी), सहायक प्राध्यापक,
कै. अण्णासाहेब पितांबर शंकर वाडीले कला महाविद्यालय,
थालनेर, ता. शिरपुर, जि. धुळे

आधुनिक हिन्दी साहित्य में मृणाल पाण्डे सर्वतोमुखी, प्रतिमा संपन्न प्रतिष्ठित कहानीकार एवं उपन्यासकार के साथ-साथ नाटककार एवं समीक्षक के रुप में उभरकर सामने आई है। इनके साहित्य पर युग की परिस्थितियाँ तथा समाज में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इन्होंने अपने नीजी जीवन के अनुभव तथा अपनी संवेदनाओं को युग की परिस्थितियों के साथ जोड़कर यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया है। मृणाल पाण्डे ने अपने साहित्य में उच्च, मध्य, एवं निम्न, तीनों वर्गों से सम्बन्ध रखने वाली स्त्री-पुरुष के सम्बधों को अभिव्यक्त किया है। मृणाल पाण्डे की कृतियों में युगबोध के साथ-साथ नारी मनोविज्ञान का चित्रण हुआ है।

मृणाल पाण्डे का साहित्य उनके व्यक्तित्व एवं उनके समय के राजनीतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक यथार्थ का दर्पण है। मृणाल पाण्डे हिन्दी साहित्य की एक सशक्त एवं लोकप्रिय लेखिका है।

समाज मानव द्वारा निर्मित एक ऐसी संस्था है, जिसके माध्यम से वह अपने विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करता है। सामाजिक जीवन में परिवार,

शिक्षा, जात-पात, छुआछूत, अंधविश्वास, शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार और परंपरागत रुढ़ियों का मनुष्य जीवन पर काफी असर होता है। मनुष्य जीवन ग्रामीण और शहरी इन दो भागों में बाँटा जा सकता है।

यदि भारतवर्ष को उसकी संपूर्णता में देखना और परखना है तो उसे इस देश के गाँवों में जाना होगा, क्योंकि भारतवर्ष गाँवों का देश है। यहाँ की अधिकांश जनता गावों में ही वास करती है। इतना ही नहीं, शहरों के विकृत विस्तार के साथ एक शहर में भी कई-कई गांव बस गये है। जब हम यहाँ गाँव अथवा ग्रामबोध की बात कर रहे हैं तब हमें गाँव के स्वरुप को बड़ी स्पष्टता के साथ चित्र में रखकर चलना होगा। वैसे तो गाँव अपने आप में एक अमूर्त संस्था है, लेकिन गाँव के सामाजिक सरोकार, गाँव की विविध आर्थिक समस्याएँ, गाँव के राजनीतिक-सांस्कृतिक परिदृश्य ही उसे मूर्तित-आकारित करती है। चूँकि कहानी जीवन के पीछे-पीछे चलती है, उसमें जीवन का यथार्थ रुप अभिव्यक्त होता है, अतः कहानी साहित्य जीवन, समय और समाज को उसकी समग्रता और वास्तविकता में ही पकड़ने का उपक्रम करता है। इस उपक्रम को मूर्तिमान करने में अनेक कहानीकारों ने अपना साहित्यिक योगदान दिया है।

चाहे शहर का समाज हो या गाँव का समाज, कोई भी रचनाकार समाज की संवेदनाओं-समस्याओं को अतिक्रांत करके साहित्य की सर्जना नहीं कर सकता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिन्दी के कुछ कथाकारों की कहानियों के केंद्र में गाँव और किसान प्रमुख रुप से रहे हैं। आज भूमण्डलीकरण, औद्योगीकरण और बाजारवाद ने किसानों की स्थिति को बहुत दयनीय बना दिया है। धीरेन्द्र झा ने ठीक ही संकेत किया है कि, "आजादी के बाद जमींदारी उन्मूलन और सीमित भूमि सुधार के चलते रैयत तो स्वतंत्र किसान बन गये, उनकी राजनीतिक-सामाजिक दावेदारी भी बढ़ी लेकिन पूरा का पूरा खेतिहर मजदूर, भूमिहीन गरीब किसान समाज हाशिए पर धकेल दिए।"1 इसी क्रम में यह भी ध्यान में रखना जरुरी प्रतित होता है कि गाँवों को अनेक कुप्रथाओं और रुढ़ियों ने बड़ा विकृत, विद्रुप कर रखा है। पर्दाप्रथा, बालविवाह, अनमेल विवाह, दहेजप्रथा, वर्णव्यवस्था, जातिप्रथा, भेदभाव, छुआछूत आदि ऐसी ही विकृतियाँ है।

आज नारी की स्थिति शोचनीय हो चली है, इस शोचनीय स्थिति के नये आयामों को नारी अपने सम्मुख पा रही है। औद्योगिक क्रांति, सूचना क्रांति एवं बाजारवाद ने शहरी नारी के सामने नई चुनौतियों को रखा है तो ग्रामीण नारी भी उससे अछूती नहीं रह सकी है इसमें दो मत नहीं कि आज शिक्षित कामकाजी आधुनिक नारी विभिन्न सामाजिक संबंधों का निर्वाह करने पर घर और बाहर की समस्याओं में सामंजस्य बिठाने के प्रयास में शारीरिक, भावनात्मक तथा आर्थिक रुप से शोषित हो रही है तो ग्रामीण क्षेत्र में दिन-रात शारीरिक श्रम करते हुए अपने घर संसार की व्यवस्था सुधारने में लगी अशिक्षित नारी शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शोषण की त्रासदी को झेल रही है। ग्रामीण महिला जिसे की खाना पकाना, पानी लाना, ईंधन बटोरना, खेतों तक भोजन पहुँचाना आदि कार्य उनके जिम्में होता है। मृणाल पाण्डे की कहानियों में ग्रामीण परिवेश का चित्रण दृष्टिगत होता है।

'चार दिन की जवानी तेरी' संग्रह की 'मुन्नूचा की अजीब कहानी' में ग्रामीण परिवेश की नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। उदा. "गाँव की अनब्याही लड़कियों पर ये सब ठाठ-इंतजाम देख के हँसी के दौर जैसे पड़ने लगे थे। "सुना विलायत में नित्यकर्म करके अंग को खुशबूदार कागज से पोंछा लेते है जी।" खित्त करके एकाच नजर सब लड़कियाँ मुन्नुचा के कमरे की ओर भी डाल रही थी। बड़ी औरते ऊपर से कोप करके भी. पल्ला मुँह पर रख हंसने वाली हुई। बड़ा आसामी वहरा मुन्नू। जाने अल्लादीन के चिराग जैसे सुटकेस से किसे क्या मिल जाए ??"2 मुन्नूचा विलायत से गाँव आता है। गाँव में वह गाँव का पानी नहीं पिता वह प्लास्टिक की बोतले साथ लाया था। इस संदर्भ में कहानी की बसंती बुआ कहती है, "पहाड़ का पानी कहाँ रह गया अब पहले जैसा? जिसके लिए पहाड़िए देस में बैठे तरसा करते थे। चियों तो पेशि हो

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

जाये। आँत का बुखार हो जाये ऐसा हो गया है। मुत्रूचा जैसे इंग्लिश टाईप जंटलमैन अब पहाड़ आये तो अपने पीने का महँगा शुद्ध जल मैदान से अलग लाने वाले हुए। यहाँ तो पेट चल गया। तो डॉक्टर, ढंग का संडास भी नहीं ठहरा।"3

ग्रामीण नारी मनोविज्ञान का चित्रण 'चार दिन की जवानी तेरी' कहानी संग्रह की कहानी 'लड़कियाँ' में भी मिलता है। कहानी में लली अपने तीन बेटियों को लेकर अपनी माँ के घर प्रसूति हेतु आती है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी महिलाएँ बेटी की तुलना में बेटे को महत्व देती है। लली को पहले ही तीन बेटियाँ है। गाँव में लली की माँ की माँ को अबकी बार लड़के का जन्म हो यह अपेक्षा होती है। इस संदर्भ में लली की माँ और पडोसन नानी लड़के के जन्म को लेकर चर्चा करते है, "लली की माँ, इस बार तो लली को लड़का ही होगा, चेहरा देखो, कैसा पीला पड़ गया है लली का, लड़कियों की बेर कैसी सुरख गुलाब लगती थी।" क्या पता, इस बार भी।4

ग्रामीण क्षेत्रों में लड़का होने पर दाई को उपहार के रुप में कुछ न कुछ दिया जाता है। 'लड़कियों' कहानी में दाई का मनोवैज्ञानिक चित्रण इन शब्दों में मिलता है- "तुलसा दाइ माँ के तलवों में तेल ठोंक रही है, और कह रही है, "इस बार लड़का होगा तो स्टेलनेस स्टील की जरी वाली साड़ी लूँगी हाँ।"5

अधिकतर खेती ग्रामीण क्षेत्रों में की जाती है। गाँवों में खेती का विशेषज्ञ महत्व होता है। 'बीज' कहानी में संयुक्त राष्ट्र संघ का जपानी, अमरीकी खाद्यान्न विशेष पहुँचते है। बंजर जमीन को उपजाऊ कैसे की जा सकती है तथा विदेशी बीज बोने से फसल अच्छी कैसे आती है इस संदर्भ में जानकारी देते है। किन्तु आगे जब विदेशी बीज बोने के कारण फसल अच्छी नहीं होती तो एक वृद्धा नारी अपनी व्यथा इन शब्दों में व्यक्त करती है, "जितना बोया तुम्हारा फिरी का बीज, उसमें बाली भी नहीं पड़ी सारी मेहनत फालतू गई कि नहीं? फिरी का सोयाबीन बोया तो वो भी नहीं उगा। अपनी फसल बोने का समय निकल गया ऊपर से इस दैल-फैल में। हमारे खेत जो बंजर रह गए, उनको हम चाटे क्या? तभी तो हमने हर्जाना माँगा। अरे, अपना देसी धान का बीज बोते तो, इससे अच्छे ही रहते। देवी की सौ। प्रस्तुत कहानी में वृद्धा नारी की मनोदशा का चित्रण मिलता है। 'बधुली चौकिदारिन की कढ़ी' कहानी में भी पहाड़ी क्षेत्र में, गाँव में एक स्कूल में चौकिदारिन का काम करने वाली नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। नारी जीवन में मातृत्व विशेष रुप से महत्व रखता है। चौकिदारिन अपने पोते का ख्याल एक मॉ की तरह रखती है। उसका पोता जब बीमार हो जाता है तो वह अस्वस्थ हो जाती है। पोते को खिलाने के लिए कढ़ी भात लाते समय जब वह गिर जाती है तो वह स्वयं भूखी रहकर अपने हिस्से की कढ़ी भात पोते को खिला देती है।

मृणाल पाण्डे की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन से जुड़ी हुई है तथा ग्रामीण क्षेत्र की नारी का मनोविश्लेषण करती है। इस संदर्भ में अर्चना शुक्ला लिखती है, "मृणाल पाण्डे की अधिकांश कहानियाँ पहाड़ी जीवन की व्यथा-कथा को दर्शाती है। समाज से जुड़े भावबोध को व्याख्यायित करने में लेखिका को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। नारी जीवन की विवशता और उसके अंतर्द्वन्द को भी इन कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है।"7

ग्रामीण महिलाओं में अक्सर अंधविश्वास पाया जाता है। पहाड़ी दूर दराज के क्षेत्रों में महिलाएँ बीमारी को दूर करने के लिए अस्पताल न जाकर घर पर ही ईलाज करवाती है। 'समुद्र की सतह से दो हजार मीटर ऊपर' कहानी की नायिका जब अपने समय की नर्तकी से मिलने पहाड़ पर जाती है तो उसकी अवस्था देखकर हैरान हो जाती है। नर्तकी अब वृद्ध हो चुकी है और अपने पति के मृत्यु के पश्चात अकेली रहती है। कहानी की नायिका कहती है, "वृद्ध नर्तकी पर बेशुमार नगीने और धातुएँ गुँथी हुई है..... हीरा, माणिक, घोती, लहसुनिया, मूंगा, सोना, चांदी, तांबा, लोहा मूंगा मंगल के लिए होता है. लहसुनिया राहू के लिए, मोती चंद्रमा के लिए, माणिक सूर्य के लिए, लोहा शांती के लिए. तांबा गठिया की तकलीफों के निवारक ग्रहों के लिए उनकी उंगलिया, उनका निजी सौरभमण्डल रचती है। उनका रहस्यमय नक्षत्र लोक जहाँ अपनी जड़ाऊ उंगलियों की रहस्यमय शक्तियों से अपने ग्रह नक्षत्रों को कुम्मैत छोड़ों की तरह बस में किए हुए वे समुद्र सतह से दो हजार मीटर ऊपर अकेली सब शत्रुओं के विरुद्ध खड़ी है।"8 अतः अंधविश्वास के कारण वह दुर्लभ नगों के लिए पैसे बरबाद करती है।

विधवा ननंद के प्रति भाभी के मन में चलने वाले कुत्सित विचारों का चित्रण 'हमसफर' कहानी में मिलता है। विधवा निर्मला मायके में कुछ दिन बिताने के बाद जब ससुराल जाती है तो उसकी भाभी गिनकर केवल छः पूरियाँ देती है। वह सोचती है, "भूख लगती है. मुन्ना बगल में सटकर फुसफुसार्यो उसने डलिया से अखबार में लपटे चार पुरियाँ उसे थमा दीं। पुरियाँ भी गिनकर घरी गयी थी कुल छह। अब इतना धी तेल भी तो ..... "तुम खाओगी?" मुन्ना पूछ रहा था। उसने सिर हिला दियाँ पुरियों कुल छह थी, और सुबह तक का सफर था। मुन्ना खाता रहा वह स्निग्ध भाव से ताकती रही। सफर में वैसे भी कम खाना अच्छा होता है कि नहीं? गाडी तो अब छूटती होगी। एक बार चली नहीं कि नींद आ जाएगी बस।"9 भाभी का इतना कटुतापूर्ण व्यवहार के बावजूद भी निर्मला सामी के प्रति सपुरता बनाए रखती है। विधवा होने के कारण सन से वह टूट जाती है। प्रस्तुत कहानी में निर्मला बेमेल विवाह की शिकार बनी महिला के रुप में चित्रित की गई है। अधेड़ उम्र के पति के मृत्यु के पश्चात यह टूट जाती है। अधेड़ उम्र के व्यक्ति को उसकी जो मनोदशा का सुंदर चित्रण मृणाल पाण्डे जी ने किया है। सफर करते समय गाड़ी के डिब्बे में एक दुल्हन के साथ अधेड़ व्यक्ति को देखकर यह सोचती है. "शायद दुहेजू हो या शायद बाप हो, स्टेशन छोड़ने आया हो, क्या पता ? उसके पति को भी तो कई मर्तबा लोग उसका बाप समझ बैठते थे इसी से खिजलाकर वह और भी चुप्प, तल्ख होता गया था शायद। कुल तीन साल का साथ। अंधेरे से अंधेरे तक। साथ क्या सपना कहों अब तो रुलाई भी नहीं आती सोचो तों वैसे सोचकर रोने जैसा था भी क्या ? ढिबरी से टिमटिमाते उजास की तरह वे साल।"10

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

'सुपारी फुआ' ग्रामीण जीवन से जुड़ी हुई अनोखी कहानी है। मृणाल जी ने प्रस्तुत कहानी में सुपारी फुआ का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। सुपारी फुआ बूढ़ी महिला है। वह विधवा है इसलिए ससुराल में उसकी हमेशा उपेक्षा की जाती है। निःसंतान होने के कारण वह टूट जाती है। वैधव्य जीवन की त्रासदी से उसका शरीर सुख जाता है, केवल प्राण ही शेष बचते है; किन्तु जब वह मायके आती है, तो काफी दिन तक जीवित रहती है। ग्रामीण संस्कृति में विवाह के बाद लड़कियों का मायके में अधिकार नहीं होता ऐसा माना जाता है। इस संदर्भ में प्रस्तुत उदाहरण द्रष्टव्य है. "फुआ की माँ ने उनसे. जो भी उनका तब घर का नाम रहा होगा, लेकर उसी घड़ी कुछ ऐसा-सा कहा था कि लली. मायके की रोटी तोड़ती है, तो आँख-कान पर लगाम देकर इस चमड़े की जीभी पर तुझे पट्ट ताला जैसा डालना होगा।"11

'हिर्दा मेयों का मॅझला' कहानी में मृणाल जी ने पहाड़ी जीवन की नारी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है। कहानी में हिर्दा मेयो बाजार जाता है। गरीबी के दिनों में एक माँ के लिए बच्चों का पालन पोषण करता कितना मुश्किल होता है। यह हिर्दा मेयों की बोज्यू के कथन से स्पष्ट होता है। वह हिर्दा मेयों के मित्र से कहती है, "तुम देवर जैसे हुए अपने हुए तब तुमसे कह रही हूँ लला, जो स्वारथ परमारथ इस घर के बँटवारे का मैंने भोगा है, ईश्वर किसी को न दिखाये। गरीबी में लड़के पालना हथेली का माँस खाना ठहरा। थोड़ा रसवाली सब्जी और दूँ।"12

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रुप में कहना होगा कि, हिन्दी की आधुनिक कथा लेखिकाओं में मृणाल जी का रथान विशिष्ट है। ये हिन्दी साहित्य क्षितिज पर उभरने वाली आठवें दशक की महिला कथाकार है। आपने अपनी रचनाओं में सामाजिक आयाम को अपनाकर व्यापक जीवन दृष्टि का परिचय दिया है। गहरी संवेदनशीलता, अनुभव की सच्चाई और प्रस्तुति का अपना मौलिक कलात्मक अंदाज कुछ ऐसी विशेषताएँ है, जिनके कारण हिन्दी की अन्य महिला कथाकारों में मृणाल जी की अलग पहचान है। उनके समस्त कथा साहित्य में भारतीय परिवारों, विशेषकर पहाड़ी जीवन की व्यवस्था के भीतर से संघर्ष और मुक्ति की छटपटाहट करती हुई नारी की असलियत पूर्ण तस्वीर है। मृणाल जी के वैचारिक एवं पत्रकारिता संबंधी लेखन में उनके विचार सजगता का पूर्ण निर्वाह दृष्टिगोचर होता है। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े भावात्मक तथा परिवेशगत स्त्रियों का हृदयग्राही मनोवैज्ञानिक चित्रण मृणाल जी के कथा साहित्य में हुआ है। मृणाल पाण्डे के कहानी साहित्य में ग्रामीण परिवेश से प्रभावित नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। ग्रामीण परिवेश की नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण 'मुन्नूचा की अजीब कहानी', 'लड़कियाँ', 'बीज', 'बचुली चौकिदारिन की कढ़ी', 'समुद्र की सतह से दो हजार मीटर ऊपर', 'हमसफर', 'सुपारी फुआ', 'हिर्दा मेयो का मंझला' आदि कहानियों में हुआ है। जिसमें ग्राम्य तथा पहाड़ी जीवन के साथ साथ सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिवेश का चित्रण भी हुआ है। अतः ग्रामीण जीवन से जुड़ी हुई नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में मृणाल जी सफल हुई है।

संदर्भ ग्रंथ :

1) हंस, अगस्त, 2006, पृ. 12
2) चार दिन की जवानी तेरी, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1995, पृ. 62
3) वही, पृ. 62
4) वही, पृ. 15
5) वही, पृ. 15
6) वही, पृ. 75
7) मृणाल पाण्डे का रचना संसार, अर्चना शुक्ला, पृ. 71
8) शब्दवेधी, मृणाल पाण्डे, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1995, पृ. 34, 35
9) एक स्त्री का विदागीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1985, मृणाल पाण्डे, पृ. 104
10) वही, पृ. 107
11) चार दिन की जवानी तेरी, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1995, पृ. 79
12) वही, पृ. 52, 53